B.Com Part - II Semester MJC

Business organisation and Mangmt (1)

Q — हैल्से मजदूरी भुगतान पद्धति की परिभाषा दीजिए। एवं इसके लाभ-हानि या गुण-दोष की विवेचना करें।

Ans — इस योजना का प्रतिपादन 1890 में हुआ। इस योजना के जन्मदाता कनाडा निवासी एफ० ए० हाल्से थे। इस योजना में में कार्य करने के समय तथा मजदूरी की दर निर्धारित कर दी जाती है। जितने समय या जो निश्चित समय के अन्दर निर्धारित प्रमाप की वस्तु तैयार हो जाती है तो श्रमिक को निश्चित मजदूरी मिल जाती है। साथ ही श्रमिक निश्चित समय के पूर्व ही कार्य पूरा कर लेता है अर्थात कुछ समय बचा लेता है तो बचाये हुए समय के लिए अतिरिक्त वेतन प्रीमियम के रूप में मिलता है। प्रीमियम बचाए गए समय की मजदूरी का 50% होता है

उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण —

निश्चित प्रमापित कार्य = 20 इकाई

निश्चित प्रमापित समय = 10 घंटा

निश्चित न्यूनतम मजदूरी = 1 रु० प्रति घंटा

प्रमापित समय से पूर्व कार्य कर लेने पर प्रव्याजि = 33 1/3%

मानलो कि श्रमिक केवल आठ घण्टे में पूरा कार्य कर लेते हैं तो मजदूरी होने की (कार्य समाप्त करने का वास्तविक समय × मजदूरी की प्रति घण्टा दर) × (प्रव्याजि की दर × बचाया हुआ समय × प्रति घंटा दर) अर्थात

(8×1 रु०) + 33 1/3% × 2 × 1 रु०

= 8 रु० + 66.7 पै.

शेष 2 घण्टे = 8 रु० + 66.7 × $\frac{2}{8}$ घंटे

= 2 रु० 16.7 पै०

कुल मजदूरी = 8 रु० 66.7 पै० + 2 रु० 16.7 पै०
= 10 रु० 83.4 पै०

यदि प्रव्याजि की दर 50% हो, तो
अर्थात् (8 × 1 रु०) + 50% × 2 × 1 रु०
= 9 रु०

शेष दो घण्टे का 9 × 2/8 घंटे
= 2.25 रु०

कुल मजदूरी = 9 रु० + 2.25 = 11.25

लाभ — इस योजना के निम्नलिखित लाभ हैं —

(1) दो पक्षों को लाभ — इस योजना में बचाए गए समय का लाभ श्रमिक तथा नियोक्ता दोनों में बांट लिया जाता है। अतः दोनों ही पक्षों को इससे लाभ मिलता है।

(2) सरलता — यह योजना काफी सरल है। इसे आसानी से कार्यान्वित किया जा सकता है।

~~(3) न्यूनतम~~
~~(3) न्यूनतम मजदूरी का आश्वासन — यह योजना काफी सरल है~~

(3) न्यूनतम मजदूरी का आश्वासन — इस योजना में प्रत्येक श्रमिक को समयानुसार निर्धारित मजदूरी दर दशा में मिलती है। अतः श्रमिकों को न्यूनतम मजदूरी का आश्वासन मिलता है।

(4) बचाए गए समय के लिए प्रेरणा — यदि कोई श्रमिक प्रमापित समय से पूर्व कार्य समाप्त कर लेता है तो उसे बचाए गए समय के लिए अतिरिक्त वेतन प्रेरणा के

रूप में मिलता है। इससे श्रमिक को अधिक कार्य कुशलता से कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

(5) न्यायोचित — इस योजना में श्रमिक को उनकी उत्पादन क्षमता का लाभ मिल जाता है। इसलिए यह योजना न्यायोचित योजना मानी जाती है।

दोष या हानि - disadvantages

इस योजना के निम्न दोष हैं —

(1) श्रमिकों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव — श्रमिक अधिक मजदूरी के लालच में अपनी सामर्थ्य से अधिक कार्य करने लगते हैं जिससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

(2) वस्तुओं के किस्म में गिरावट — समय बचाने के प्रयास में श्रमिक कार्य की श्रेष्ठता की उपेक्षा करते हुए जल्दी से जल्दी कार्य पूरा करने की कोशिश करते हैं जिसके परिणामस्वरूप वस्तुओं के किस्म में गिरावट आ जाती है।

(3) मशीनों की अधिक टूट-फूट — तेजी तथा असावधानी से कार्य करने की होड़ का बहुत अधिक कुप्रभाव मशीनों पर पड़ता है। मशीनों की टूट-फूट व घिसावट बढ़ जाती है।

(4) लाभ का गलत वितरण — नियोक्ताओं को बचाये गए समय का 50% लाभ मिलता है। श्रमिक इसका विरोध करते हैं क्योंकि अतिरिक्त लाभ प्रायः श्रमिकों की कार्यकुशलता का फल होता है। अतः नियोक्ताओं को इसमें हिस्सा न्यायोचित नहीं है।

x ———— x ———— x

Dr. Raj Kumar Prasad
Associate Professor
Deptt. of Commerce
Shershah College SASARAM